भट्टारक वादिचन्द्र

भट्टारक वादिचन्द्र भट्टारक ज्ञानभूषण द्वितीय के प्रशिष्य और भट्टारक प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। यह अपने समय के अच्छे विद्वान, कवि और प्रतिष्ठाचार्य थे।

इनका समय विक्रम संवत् 17वीं शताब्दी है।

रचना-परिचय : भट्टारक वादिचन्द्र द्वारा लिखित निम्न रचनाएँ हैं—

1. पार्श्वपुराण : इस ग्रन्थ में 1500 पद्यों से युक्त पार्श्वनाथ का चरित्र अंकित है। इस ग्रन्थ को कवि ने विक्रम संवत् 1648 कार्तिक सुदी पंचमी के दिन वाल्मीकि नगर में लिखा है।

2. ज्ञानसूर्योदय नाटक : यह एक संस्कृत नाटक है, जो प्रबोधचन्द्रोदय नामक नाटक के उत्तर रूप में लिखा गया है।

3. पवनदूत : यह एक खंड काव्य है, जिसकी पद्य संख्या 101 है। जिस तरह कालिदास के विरही यक्ष ने मेघ के द्वारा अपनी पत्नी के पास सन्देश भेजा है, उसी तरह इसमें उज्जयिनी के राजा विजय ने अपनी प्राणप्रिय तारा के पास, जिसे अशनिवेग नाम का विद्याधर हर ले गया था, पवन को दूत बनाकर विरह सन्देश भेजा है। यह रचना सुन्दर और सरस है।

4. सुभग सुलोचना चरित्र : इस ग्रन्थ की एक प्रति ईडर के शास्त्र भंडार में है। प्रशस्ति से जान पड़ता है कि यह ग्रन्थ संस्कृत में लिखा गया है।

5. श्रीपाल आख्यान : यह एक गीतिकाव्य है जो गुजराती मिश्रित हिन्दी भाषा में है, और जिसे कवि ने संवत् 1651 में लिखा है।

6. पांडव पुराण : इस ग्रन्थ में पांडवों का चरित अंकित किया गया है। इसकी रचना कवि ने विक्रम संवत् 1654 में समाप्त की है।

7. यशोधर चरित : इसमें यशोधर का जीवन-परिचय दिया गया है। कवि ने इस ग्रन्थ को विक्रम संवत् 1657 में रचा है।